समास

समास वह रीति है जिससे दो या अधिक शब्दों के संयोग से एक नया स्वतंत्र शब्द बनता है । ऐसे शब्द को 'सामासिक' शब्द ''या'' समास'' कहलाता है।

हिन्दी में समास के छः बेद हैं।

१. अव्ययी भाव समास

२. तत्पुरुष समास

३. कर्मधारय समास

४. द्विगु समास

५. द्वन्द्व समास

६. बहुव्रीही समास

अव्ययी भाव समासः- वह समास जिसमें पहला शब्द प्रधान हो और पूर शब्द क्रिया विशेषण हो।

जैसेः-

१.	प्रति दिन	२.	अजीवन
३.	यथा शक्ति	४.	एकाएक
५.	रातोंरात	६.	धीरे-धीरे
७.	बीचों-बीच	८.	मन ही मन
९.	सहित	१०.	यथामति आदि

<u>तत्पुरुष समासः-</u>वह समास जिसमें दूसरा शब्द प्राधान हो और पहले शब्द में कर्ता और संबोधन को छोडकर अन्य किसी कारक की विभक्ति का लोप हो ।

जैसे :- भक्तिवश, जातिहीन धर्मपत्नी । तत्पुरुष समास में बहुधा संज्ञाएँ या विशेषण होते हैं।

राजपुत्र - राजा का पुत्र इस में पुत्र ष्धान है और इसका विग्रह करने पर राजा शब्द संबंध कारक में तथा पुत्र शब्द कर्ता कारक में रहते है ।

<u>उदाहरणः-</u> गंगाजल, मार्गव्यय, जलमग्रं हाथकडी, ग्रन्थाकार, धर्मभ्रष्ट, घुडदौड, राजकुमार, राजमाता आदि ।

इस समास में इन दो शब्दों को अलग करने पर का, के, की, संबन्ध कारक के चिह्न आते हैं।

<u>कर्मधारय समास</u>

जिस समास में विशेष्य और विशेषण का या उपमेय - उपमान का मेल हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं । इस समास में विग्रह करने पर दोनों शब्द एक ही कारक के रह जाते हैं ।

जैसे :- शरच्छन्द्र, वज्र देह, इस कर्मधारय समास में पहला पद विशेषण दूसरा पद संज्ञा या सर्वनाम रहता है ।

१. चन्द्र मुख २. चरण कमल, ३. नील कमल

४. अच्छा लडका श्रेष्ठ ५. श्रेष्ठ व्राहनम. ४. श्याम सुन्दर

७. भर पेट ८. महा नदी ९. सदा धर्म १०. सत गुण

<u>द्विगु समासः-</u> जिस कर्मधारय समास में पहला शब्द संख्यावाचक हो और उससे समुदाय का बोध होता है, उसे द्विगु समास कहते है ।

जैसेः- त्रिकाल (तीनों कालों का समूह)
त्रिभुवन (तीनों भुवनों का समूह)
नव रस (नौ रसों का समूह)
अठन्नी (आठ आनों का समाहार)

<u>द्वन्द्व समासः-</u>

जहाँ दोनों पद प्रधान हों-बराबर हो तथा दोनों शब्दों के बीच में और अथवा 'वा' शब्द लुप्त हो, वहां द्वन्द्व समास होता है ।

इस के तीन प्रकार है ।

<u>इतरेतर द्वन्द्व समासः-</u> जहाँ विग्रह करने पर बीच में और तथा आदि समुच्चय बोधक आये ।

जैसे :- ऋषि मुनि (ऋषि और मुनि) माता-पिता, लोटा-डोर, राधा-कृष्ण, हल-बैल, भाई-बहन, पाप-पुण्य. आदि ।

समाहार द्वन्द्व समासः- जिस द्वन्द्व समास से उसके पदों के अतिरिक्त उसी तरह का और भी अर्थ सूचित हो, उसे समाहार द्वन्द्व कहते है ।

जैसे :- सेठ-साहूकार (सेठ तथा साहूकार आदि धनी लोग)
माल-मत्ता माल तथा मत्ता वगैरह भूल-चूक (भूल, चूक गलती, त्रुटि आदि)

<u>वैकल्पिक द्वन्द्व समासः-</u> जहाँ दो या अधिक पदों के बीच में वा, अथवा, या आदि विकल्प सूचक समुच्य बोधक लुप्त हो. वहाँ वैकल्पिक द्वन्द्व होता है ।

जैसेः- जात-कुजात (जात या कुजात) कर्त्तव्या कर्त्तव्य, सत्यासत्य, धर्माधर्म आदि.

<u>बहुव्रीहि समासः-</u> जहां कोई भी शब्द प्रधान न हो और समास पद किसी अन्य शब्दों को विशेषता बताये, वहाँ बहुव्रीहि समास होता है ।

जैसे :- जितेन्द्रिय (जीती है इन्द्रयों जिसने) करण । दत्त धन (दत्त धन दिया गया धन जिसको) सम्प्रदान निर्विकार (निकल गया है विकार जिसमें से) अपादान दशानन (दस है आनन जिसके) सम्बन्ध, चक्रपाणि, कमलनेत्र, मन्दबुद्धि इत्यादि।

Prepared by
B. Ram Mohan
M.A., M.Phil, HPT(Ph.D.)
APSWRS & Jr. College, Pulivendula
YSR Kadapa (Dist).